ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष: 14 अंक: 163 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका दिसम्बर 2021

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

परमसत्ता का साक्षात्कार

www.the-comforter.org

उस परमसत्ता से जुड़े बिना न तो साक्षात्कार और प्रत्यक्षानुभूति सम्भव है और न ही नाम खुमारी। उस परम सत्ता का साक्षात्कार हुए बिना सब झूठा है। तर्क, बुद्धिचातुर्य, प्रदर्शन, शब्द जाल, बहिर्मुखी आराधना और अन्धविश्वास उस परमसत्ता से जुड़ने में कोई सहयोग नहीं कर सकते।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन)

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष: 14 अंक: 163 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका दिसम्बर 2021

❖
संस्थापक एवं संरक्षक:
पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

❖
सम्पादक:
रामूराम चौधरी

कार्यालय:
स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो. बॉक्स नं. - 41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com

Head Office
Spiritual Science Magazine:
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Post Box No. - 41
Near Hotel Lariya, Chopasani,
Jodhpur (Raj.) India - 342001

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com
Website:
www.the-comforter.org

अनुक्रम

परमसत्ता का साक्षात्कार 2
ईश्वर आराधना से सब कुछ मिलता है। 4
स्वर्णमयी भारत के बढ़ते कदम 7
योगयुक्त अवस्था में संदेश 10
अवतरण दिवस समारोह की झलकियाँ 12
सिद्धयोग ध्यान शिविरों की झलकियाँ 16
साधना विषयक बातें 24
साधक की अनुभूति 29
दिव्य जन्म और दिव्य कर्म 30
सिद्ध-योगियों की महिमा 33
रूपान्तरण 36
योग के आधार 41
सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण 43
ध्यान की विधि 46

ईश्वर आराधना से सब कुछ मिलता है।

ईश्वर की आराधना से संसार का हर सुख प्राप्त हो सकता है तथा हर प्रकार के कष्ट से छुटकारा मिल सकता है। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता के 7वें अध्याय में इस सम्बन्ध में कहा है–

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ।। 7:16।।

हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ अर्जुन! उत्तम कर्मवाले अर्थार्थी (धन की इच्छावाले), आर्त्त (संकट निवार्णार्थ), जिज्ञासु और ज्ञानी चार प्रकार के भक्तजन मेरे को भजते हैं।

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्तएकभक्तिर्विशिष्यते।
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः।। 7:17।।

उनमें नित्य मेरे में एकीभाव से स्थित हुआ, अनन्य प्रेम भक्तिवाला ज्ञानी भक्त अतिउत्तम है, क्योंकि ज्ञानी को मैं अत्यन्त प्रिय हूँ और वह ज्ञानी मुझको प्रिय है।

उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम्।
आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम्।। 7:18।।

यह सभी (सब ही) उदार हैं (उत्तम हैं) परन्तु ज्ञानी मेरा स्वरूप ही है। (ऐसा) मेरा मत है, क्योंकि वह स्थिर बुद्धि अति उत्तम गतिस्वरूप मेरे में ही अच्छी प्रकार स्थित है।

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते।
वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः।। 7:19।।

बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में तत्त्व ज्ञान को प्राप्त हुआ ज्ञानी सब कुछ

www.the-comforter.org

वासुदेव ही है, इस प्रकार मेरे को भजता है वह महात्मा अति दुर्लभ है।

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः।
तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया।। 7:20।।

अपने स्वभाव से परे हुए उन-उन भोगों की कामना द्वारा ज्ञान से भ्रष्ट हुए उस नियम को धारण करके अन्य देवताओं को भजते हैं।

यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्।। 7:21।।

जो-जो सकामी भक्त जिस-जिस देवता के स्वरूप को श्रद्धा से पूजना चाहता है, उस भक्त की मैं उसी देवता के प्रति श्रद्धा को स्थिर करता हूँ।

स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते।
लभते च ततः कामान्मयैव विहितान् हि तान्।। 7:22।।

वह पुरुष उस श्रद्धा के युक्त हुआ उस देवता के पूजन की चेष्टा करता है, और उस देवता से मेरे द्वारा ही विधान किये हए, उन इच्छित भोगों को निःसन्देह प्राप्त होता है।

अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम्।
देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि।। 7:23।।

परन्तु उन अल्पबुद्धिवालों का वह फल नाशवान् है। देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं, मेरा भक्त मुझको ही प्राप्त होता है।

गीता में भगवान् ने यह स्पष्ट कर दिया कि जीव जिस भाव से पूजा करता है, वह वही पाता है। यह संसार एक ही परमसत्ता का विस्तार है, इस भाव को जिसने तत्त्व से जान लिया, उसका कर्ताभाव पूर्ण रूप से नष्ट हो जाता है। ऐसी स्थिति में जीव संसार में विचरण करते हुए जो भी कर्म करता है, वह उन सभी

कर्मों के बन्धन से मुक्त ही रहता है। भगवान् ने इस सम्बन्ध में साफ कहा है कि बहुत जन्मों के बाद अन्त के जन्म में जीव तत्त्व ज्ञान से ईश्वर को जानने में योग्य होता है। इसीलिए भगवान् ने 18वें अध्याय के 66वें श्लोक में स्पष्ट आदेश दिया है–

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।। 18:66।।

सर्व धर्मों को त्याग कर केवल एक मुझ परमात्मा की ही अनन्य शरण को प्राप्त हो, मैं तेरे को सम्पूर्ण पापों से मुक्तकर दूंगा, तू शोक मत कर।

इतने स्पष्ट आश्वासन के बाद भी, इस समय संसार में इतना घोर अन्धकार व्याप्त है कि जीवों को कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है। इससे यह बात ठीक लगती है कि भगवान् ने चौथे अध्याय में– 'यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवतिभारत' वाला समय अब अधिक दूर नही है। इस समय जो स्थिति संसार की है उसका इलाज तो उस परमसत्ता के अवतरण के बिना पूर्णरूप से असम्भव लगता है। छोटे मोटे प्रकाश से संसार का तमस् मिटना अब असम्भव हो गया है।

10 अप्रेल 1988

www.the-comforter.org

स्वर्णमयी भारत के बढ़ते कदम

गतांक से आगे...

श्री अरविन्द आश्रम से प्रकाशित पुस्तक –''भारत का पुनर्जन्म''में विषद वर्णन किया है कि किस प्रकार विदेशी आततायियों व भारत के भीतर सत्ता लोलुप लोगों ने इस देश का शोषण किया, लूटा और अब कल्कि के आगमन से किस प्रकार देश अपने उदीयमान आलोक से वापस विश्व गुरु बनेगा और पूरे विश्व को शांति का पैगाम देगा। साधकों के ज्ञान बोध के लिए क्रमशः हर अंक में कुछ जानकारियाँ वर्णित की जाएंगी।

१९०६ (ब्रिटिश शासन के विरुद्ध बंगाली भावना की बढ़ती हुई तीव्रता से भयभीत हो कर वाईसराय, लार्ड कर्जन ने १९०५ में बंगाल का विभाजन कर दिया। इस 'भेद के द्वारा शासन' की नीति को ईमानदारी के साथ लागु करने का दोहरा उद्देश्य था, बंगाल में बढ़ते हुए राजनैतिक आंदोलन को तोड़ना और हिंदुओं तथा मुसलमानों के बीच मनमुटाव पैदा करने के लिए मुस्लिम प्रभावी पूर्वी बंगाल का उपयोग –एक ऐसी नीति जिसकी परिणति चालीस वर्ष बाद भारत के विभाजन में होने को थी।।

बंगाल ने अपने विभाजन का उत्तर व्यापक और सर्वसम्मत विरोधों से दिया, जिनमें रवींद्रनाथ टैगोर, सुरेंद्रनाथ बनर्जी, बिपिन चंद्र पाल, अश्विनी कुमार दत्त जैसे अनेक महान व्यक्तियों ने भाग लिया। स्वदेशी का आदर्श, जिसने ब्रिटेन में बनी वस्तुओं के बहिष्कार की आवाज उठाई, व्यापक रूप से फैला।

मार्च १९०६ में बारीन घोष ने कछ और लोगों के साथ मिलकर जोशीला बंगाली साप्ताहिक युगांतर प्रारंभ किया, जिसमें श्री अरविन्द ने अनेक लेख लिखे। अगस्त में बी. सी. पाल ने प्रसिद्ध अँग्रजी दैनिक बंदे मातरम का प्रकाशन प्रारंभ किया। श्री अरविन्द उसमें शामिल हो गये और शीघ्र ही

उसके संपादकत्व का भार उठा लिया, साथ ही साथ उनकी परदे के पीछे की गतिविधियाँ और लोगों के साथ चलती रहीं, जिनमें बाल गंगाधर तिलक और लाला लाजपत राय भी सम्मिलित थे।

मई, १९०८ तक दिन-प्रतिदिन श्री अरविन्द ने नवजात राष्ट्रीय आंदोलन में प्रेरणा. तीव्रता और उद्देश्य की स्पष्टता भरने के लिए बंदे मातरम के पृष्ठों का उपयोग किया। ब्रिटिश सत्ताधारियों, आत्म-सदाचारी आंग्ल भारतीय प्रेस और अधिकांश कांग्रेसी नरम दल वालों के प्रचंड विरोध का सामना करते हुए उनका पहला काम होगा, उन्हीं के शब्दों में, भारत में राजनैतिक सरगर्मी का उद्देश्यपूर्ण और निर्बाध स्वराज खुले आम घोषित करना तथा समाचार-पत्र के पृष्ठों में इस पर बार-बार जोर देना। श्री अरविन्द भारत के पहले राजनेता थे जिन्होंने सार्वजनिक रूप से ऐसी घोषणा करने का साहस किया और इसमें उन्हें तत्काल सफलता मिली। नेशनलिस्ट पार्टी ने स्वराज शब्द को लेकर स्वतंत्रता के अपने आदर्श को व्यक्त करने के लिए उसका उपयोग किया और शीघ्र ही वह सर्वत्र प्रचलित हो गया। उन वर्षों में जो सबसे बड़ी बात हुई वह थी देश में एक नई चेतना का सृजन।

निम्नलिखित उद्धरण बंदे मातरम् से लिया गया है-

सितंबर १, १९०६

कांग्रेसी आंदोलन की वास्तविक नीति प्रारंभ से ही होनी चाहिए थी- अपने झंडे के नीचे इस विशाल देश में विद्यमान शक्ति के सभी तत्वों को एकत्रित करना। ब्राह्मण पंडित और मुस्लिम मौलवी, जातीय संगठन और कारीगर, कुली अपने काम पर और किसान अपने खेत में इनको भी अपनी गतिविधियों के क्षेत्र के बाहर नहीं छोड़ना चाहिए था क्योंकि प्रत्येक एक शक्ति है, बल की इकाई है; और राजनीति में विजय होती है जो ऐसी

www.the-comforter.org

इकाइयों की सबसे बड़ी संख्या और उन्हें सबसे अधिक सधा रूप से सटाकर व्यवस्थित कर सके और अत्यधिक कुशलता के साथ उनका उपयोग कर सके; वह उन्हें नहीं प्राप्त होती जो उत्तम से उत्तम तर्क प्रस्तुत कर सकते हैं अथवा बात करने में बड़े वाकपट हैं।

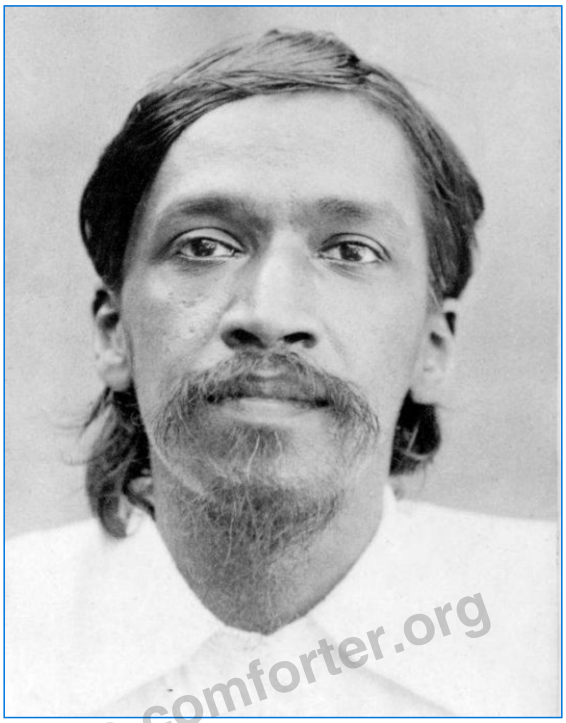

लेकिन कांग्रेस ने तो राजनीति के बिल्कुल बुनियादी तथ्यों के संबंध में गलत धारणाओं के साथ और अपनी नजरें ब्रिटिश सरकार की तरफ और सर्वसाधारण से परे रखकर प्रारंभ से ही शरुआत की।

सितंबर ४, १९०६

हमने इस कार्रवाई बंगाल के विभाजन का इतनी जोरदारी से विरोध इसलिए किया क्योंकि वह बंगला भाषी जाति की राजनैतिक शक्ति पर एक गंभीर आघात करने के लिए परिकल्पित किया गया था। हमारी दूसरी आपत्ति यह थी कि सरकार एक मुस्लिम प्रांत बनाने का दम भरना चाह रही थी जिसकी राजधानी ढाका हो और जिसका स्पष्ट उद्देश्य था एक ऐसे प्रांत में हिंदुओं और मुसलमानों के बीच वैमनस्य के बीज बोना जिसने वर्तमान ब्रिटिश संबंध के पूरे इतिहास में उसे कभी जाना ही नहीं था। वर्तमान, आंदोलन में एक नई शक्ति की चेतना है, एक नये जीवन की उत्तेजना, एक नये आदर्श की प्रेरणा। यह आंदोलन केवल विभाजन के विरुद्ध अथवा सरकार की किसी विशेष कार्रवाई के विरुद्ध आंदोलन नहीं था।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

योगयुक्त अवस्था में संदेश

.....योगयुक्त अवस्था में श्री अरविन्द को जो दूसरा संदेश मिला, वह इस प्रकार था– इस एक वर्ष के एकान्तवास में तुम्हें कुछ दिखाया गया है, यह चीज दिखाई गयी है, जिसके बारे में तुम्हें संदेह था। वह है हिन्दू धर्म का सत्य। इसी धर्म को मैं संसार के सामने ऊपर उठा रहा हूँ। यही वह धर्म है, जिसे मैंने प्राचीन ऋषि–मुनियों और अवतारों के द्वारा विकसित किया और पूर्ण बनाया है। अब यह धर्म अन्य जातियों में मेरा काम करने के लिए आगे बढ़ रहा है। मैं अपनी वाणी का प्रसार करने के लिए इस जाति को ऊपर उठा रहा हूँ। यही वह सनातन धर्म है जिसे तुम पहले सचमुच नहीं जानते थे किन्तु जिसे अब मैंने तुम्हारे सामने प्रकट कर दिया है। तुम्हारे अन्दर जो नास्तिकता थी, जो संदेह था, उनका उत्तर दे दिया गया है। जब तुम बाहर निकलो तो सदा अपनी जातियों को यहीं वाणी सुनाना कि वे सनातन धर्म के लिए उठ रहे हैं, वे अपने लिए नहीं बल्कि संसार के लिए उठ रहे हैं। उन्हें संसार की सेवा के लिए स्वतंत्रता दे रहा हूँ। अतएव जब यह कहा जाता है कि भारत ऊपर उठेगा, तो उसका अर्थ होता है, सनातन धर्म ऊपर उठेगा। जब कहा जाता है कि भारत महान् होगा तो उसका अर्थ होता है, सनातन धर्म महान् होगा। जब कहा जाता है कि भारत बढ़ेगा और फैलेगा तो इसका अर्थ होता है सनातन धर्म बढ़ेगा और सम्पूर्ण विश्व पर छा जायेगा। भारत धर्म के द्वारा और धर्म के लिए ही अपने अस्तित्व में है। धर्म की महिमा बढ़ाने का अर्थ है, देश की महिमा बढ़ाना।

मैंने तुम्हें दिखा दिया है कि मैं सब जगह हूँ, सभी मनुष्यों और सभी वस्तुओं में हूँ, मैं इस आन्दोलन में हूँ और केवल उन्हीं के अन्दर कार्य नहीं कर रहा जो देश के लिए मेहनत कर रहे हैं, बल्कि उनके अन्दर भी जो इनका

www.the-comforter.org

विरोध कर रहे हैं और मार्ग में रोड़े अटकाते हैं। मैं प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर काम कर रहा हूँ। मनुष्य चाहे जो कुछ सोचे या करे पर वे मेरे हेतु की सहायता करने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं कर सकता। वे भी मेरा ही काम कर रहे हैं, वे मेरे शत्रु नहीं बल्कि मेरे यंत्र हैं। तुम यह जाने बिना कि तुम किस ओर जा रहे हो, अपनी सारी क्रियाओं के द्वारा आगे बढ़ रहे हो।

तुम करना चाहते हो कुछ और परन्तु कर बैठते हो कुछ और। तुम एक परिणाम को लक्ष्य बनाते हो और तुम्हारे प्रयास ऐसे हो जाते हैं, जो उससे भिन्न या उल्टे परिणाम लाते हैं। शक्ति का आविर्भाव हुआ है और उसने लोगों में प्रवेश किया है।

–महर्षि अरविन्द

अवतरण दिवस– 24 नवम्बर, 2021

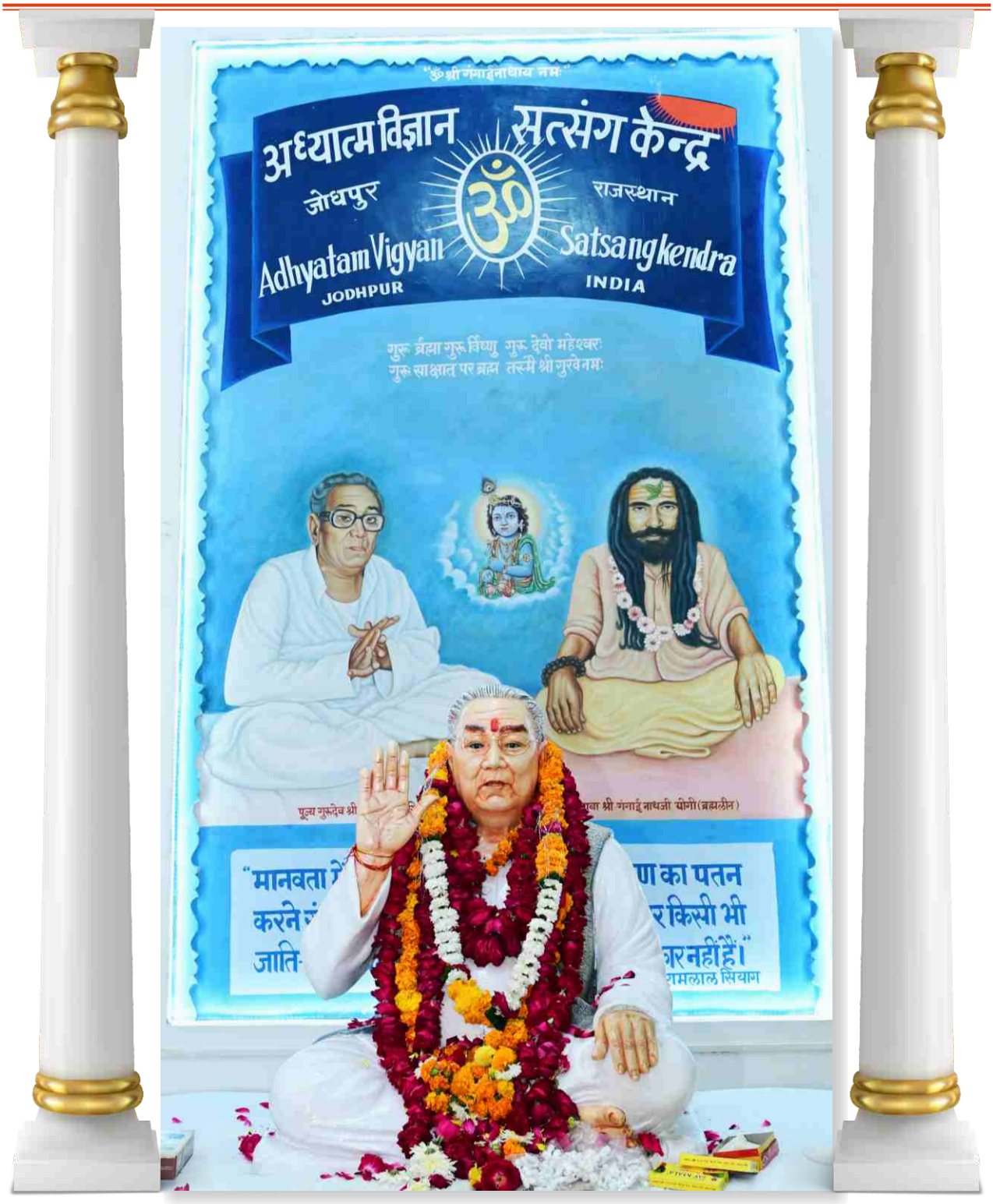

24 नवम्बर, 1926 को श्री कृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था।

24 नवम्बर 2021

सूर्यनगरी जोधपुर आश्रम में समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का 96वाँ अवतरण दिवस श्रद्धापूर्वक मनाया गया।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर की शाखाओं में अवतरण दिवस की झलकियाँ

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा– कोटा

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा– मुम्बई

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा– डीडवाना

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा- गंगापुरसिटी

बेंगलुरु में साधकों द्वारा श्रद्धा पूर्वक अवतरण दिवस मनाया गया।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर आश्रम

अक्टूबर व नवम्बर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

31 अक्टूबर, 2021 जोधपुर जिले के उप कारागृह, बिलाड़ा में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग कार्यक्रम।

01 नवम्बर, 2021 शहीद भैरू लाल काला बादल सामुदायिक भवन में चल रहे 7 राज. एनसीसी शिविर में सिद्धयोग कार्यक्रम

11 नवम्बर, 2021 कोटा स्थित राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय बल्लभ नगर में सिद्धयोग कार्यक्रम

नवम्बर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

13 नवम्बर, 2021 कोटा स्थित छत्रपति शिवाजी सीनियर सेकेंडरी स्कूल में सिद्धयोग कार्यक्रम।

15 नवम्बर, 2021 कोटा स्थित राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय महावीर नगर थर्ड में सिद्धयोग कार्यक्रम

15 नवम्बर, 2021 बाड़मेर के पचपदरा तहसील के एक विद्यालय में सिद्धयोग शिविर आयोजित।

नवम्बर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

17 नवम्बर, 2021 कोटा स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सुभाष नगर में सिद्धयोग कार्यक्रम।

20 नवम्बर, 2021 गायत्री सेकेंडरी स्कूल खंडप, बाड़मेर में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग कार्यक्रम आयोजित।

20 नवम्बर, 2021 सीनियर सेकेंडरी स्कूल खंडप, बाड़मेर में सिद्धयोग शिविर आयोजित।

नवम्बर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

20 नवम्बर, 2021 सीनियर सेकेंडरी स्कूल सरवड़ी, बाड़मेर में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग कार्यक्रम।

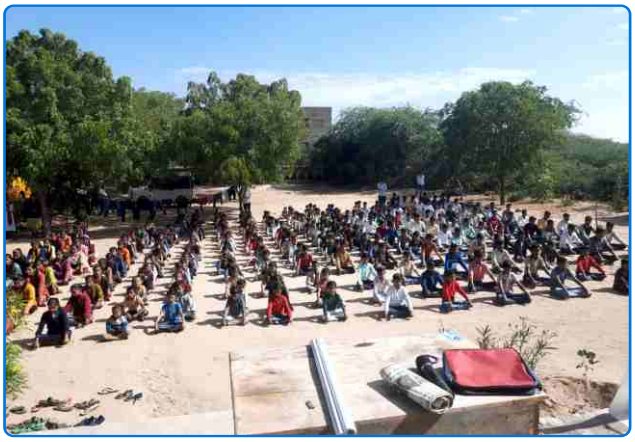

20 नवम्बर, 2021 जगदम्बा पब्लिक उच्च माध्यमिक विद्यालय खंडप, बाड़मेर में सिद्धयोग कार्यक्रम।

22 नवम्बर, 2021 राजसमंद के विभिन्न विद्यालयों में सिद्धयोग ध्यान शिविर आयोजित।

नवम्बर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

दिनांक 23 नवम्बर, 2021 को राजियावास, सरविना, कालिजंर, काबरा, कोटड़ा, नाहरपुरा आदि गाँवों के विभिन्न विद्यालयों में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग ध्यान शिविर आयोजित।

दिनांक 25 नवम्बर, 2021 राजसमन्द जिले के भीम पंचायत समिति के नारबद खेड़ा, नई कल्ला, सरोथ, बिलियावास आदि गाँवों में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आयोजित।

नवम्बर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

दिनांक 26 नवम्बर, 2021 को राजसमंद जिले के देवेले चौराहा, जवाजा, लोटियाना, सूरजपुर, बारला चौड़ा, कुकडा आदि गाँवों के विभिन्न विद्यालयों में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आयोजित।

दिनांक 27 नवम्बर, 2021 को कोटा स्थित मॉडर्न इंडिया पब्लिक स्कूल में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आयोजित।

नवम्बर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

28 नवम्बर, 2021 को ब्यावर तहसील के जय हिन्द एकेडमी विद्यालय में सिद्धयोग शिविर आयोजित।

28 नवम्बर, 2021 कोटा जिला के अलनिया में राजस्थान राज्य स्काउट एवं गाइड केंद्र में सिद्धयोग शिविर।

28 नवम्बर, 2021 को कोटा जिला के मंडाना स्थित राजकीय आवासीय छात्रावास में सिद्धयोग शिविर।

नवम्बर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

29 नवम्बर, 2021 को कोटा स्थित विद्या मंदिर विद्यालय में सिद्धयोग ध्यान शिविर आयोजित।

29 नवम्बर, 2021 केसर पब्लिक उच्च प्राथमिक विद्यालय पीपाड़ रोड़, जोधपुर में सिद्धयोग शिविर।

30 नवम्बर, 2021 कोटा स्थित फ्लोरेंस नर्सिंग कॉलेज में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग शिविर।

साधना विषयक बातें

गतांक से आगे...

योगमार्ग पर आराधनाशील साधक को विभिन्न प्रकार के पहलुओं का सामना करना होता है। कभी उतार, कभी चढ़ाव, मानसिक उद्वेग, कभी हँसी-खुशी, कभी बेबसी, उदासीनता, काम, क्रोध और न जाने इस योग मार्ग की यात्रा में कितने ही पड़ाव और हर मोड़ पर चौराहा और थोड़ी देर बाद दूसरे मोड़ पर फिर चौराहे आते हैं, जिससे साधक दिग्भ्रमित हो जाता है यदि उस पर सद्गुरुदेव की असीम कृपा बराबर न बनी रहे तो।

श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि श्री अरविन्द घोष, श्रीमां सहित कई प्राचीन योगियों के समय, उनके शिष्यों से उनका जो वार्तालाप हुआ है, उसको समय समय पर इस शीर्षक के अंतर्गत देंगे जिससे आराधनाशील साधकों को इस मार्ग पर चलने में सहायता मिल सके।

प्रश्नः- आजकल जरा ज्यादा बात कर लूं तो सिर घूमता है और कांपने लगता है और उसके बाद दुर्बलता लगती है, चंचल हो उठती हूँ।

उत्तरः- यह सब न होना अच्छा है-जैसे भीतर शांत रहना चाहिये वैसे शरीर में भी सब शांत, सुखमय, अचंचल होना चाहिये। Peace in the cells- (अणु-अणु में शांति) व्याप जायेगी, सिर चकराना आदि और नहीं रहेगा।

प्रश्नः- काम की बात कहते-कहते अनावश्यक बात भी बोल जाती हूँ। उसके बाद देखती हूँ कि इससे मेरी आंतरिक शांति और गंभीरता नष्ट होती है।

उत्तरः- अंतरस्थ रह, सचेतन हो बात करना-यही होना चाहिये। यह अभ्यास पक्का हो जाये तो ऐसी अड़चन और नहीं रहेगी।

उस घर में कुछ वातावरण में क्षुब्धता है, यह ठीक ही है-लेकिन क्षुब्धता चाहे बाहर से हो या भीतर से, धीर भाव से दृढ़ता के साथ शक्ति के

www.the-comforter.org

ऊपर भरोसा करने से कोई शक्ति कुछ नहीं बिगाड़ सकती।

शक्ति की जय होगी ही, यह विश्वास हर समय रखकर शांत, धीर, भयशून्य होकर साधना करनी होगी।

रुकावटें इसीलिये आती हैं कि शक्ति उतरकर रास्ता साफ कर दे। निम्न प्रकृति को शक्ति के प्रकाश, शांति और शक्ति से भर रूपांतरित करने के लिये उसकी तह में चली जाओ।

यही ज्ञान ठीक है–मूलाधार है शरीर चेतना का केंद्र, वह है कामावेग का स्थान, वहां शक्ति का राज्य स्थापित करना होगा।

प्रश्नः– देख रही हूँ कि सत्य की, ज्ञान की, शांति को, चेतना को, पवित्रता को सीढ़ी की तरह कुछ नीचे उतर रहा है। बीच–बीच में उस सीढ़ी पर मानों चढ़ जाती हूँ और वहाँ अनेक बालिकाओं के साथ भेंट होती है।

उत्तरः– जिन बालिकाओं की बात तुमने लिखी है वे विभिन्न स्तरों पर भगवान् की शक्ति है। तुम्हारी अनुभूति बहुत अच्छी है–अवस्था भी अच्छी है–साधना भली प्रकार चल रही है–बाधाएँ आती हैं बहिः प्रकृति से अवस्था को तंग करने के लिये–इन्हें ग्रहण मत करो।

दो अग्नियां हैं मन की शांत और प्राण की तीव्र अभीप्सा जो ऊपर उठ रही हैं–उसके फलस्वरूप ऊर्ध्व चेतना का ज्योतिर्मय प्रकाश नीचे उतरता है।

प्रश्नः– गले से बांये हाथ तक मानों कुछ हो गया है और हो रहा है। महसूस कर रही हूँ कि इतना–सा भाग झिन झिन कर शांत–अवश हुए जा रहा है और प्रत्येक रोमकूप के अंदर नीले प्रकाश की तरह बूंद–बूंद कर कुछ गिर रहा है।

उत्तरः– ऊर्ध्व चेतना ही उतर रही है। गले में है बहिर्मुखी बुद्धि का केंद्र, बाह्य कर्मेन्द्रिय का एक स्थान। गला, कंधा और वक्ष का ऊपरी हिस्सा। (हृदय के ऊपर है कर्मोन्मुख vital

www.the-comforter.org

mind (प्राणिक मन) का स्थान। वहाँ ऊपर की शक्ति का विस्तार हो रहा है। सफेद जवा पुष्प-श्रीमां की शुद्ध शक्ति।

प्रश्नः- सीढ़ी से नीचे प्रणाम हॉल की ओर आते हुए मैं अनुभव करती हूँ कि तुम ऊपर से मेरे भीतर ही उतर रही हो और बीच-बीच में अनुभव करती हूँ कि तुम्हारे पग रखते ही मेरे अंदर कमल खिल रहा है।

उत्तरः- यह अनुभव सच्चा है। उस समय शक्ति तुम्हारे भीतर उतर चेतना (कमल) को खिला देती है।

शांति उतरना अच्छा ही है-भीतर और बाहर सब ओर प्रगाढ़ शांति उतरे।

प्रश्नः- अंहकार, वासना, कामना, माँग, हिंसा, गर्व, आसक्ति, अचेतनता कहाँ से आती है ? उनका वास कहाँ है ? हे शक्ति ! ये सब कब और कैसे पूर्णतः दूर होंगी ?

उनका वास अंदर कहीं नहीं है-ये बाह्य प्रकृति से आती हैं। पर जब मनुष्य के अंदर स्थान मिला है तो ये आणिक स्तर पर अधिकार किये बैठी हैं- जैसे अतिथि बुलाये जाने पर घर पर अधिकार करके बैठ जाये। योगसाधना द्वारा हम उन्हें बाहर धकेलते हैं, फिर ये बाहर से दुबारा अधिकार जमाने के प्रयास में रत रहती हैं-जब तक ये विनष्ट नहीं हो जाती हैं।

इस तरह साधारण चेतना में उतर आने की भौतिक चेतना की पुरानी आदत सब में आसानी से ही आ जाती है। उसके लिये दुःखी मत होओ, स्थिर हो पुनः उर्ध्व चेतना में लौट जाओ। लौट जाना पहले की अपेक्षा अब सरल है।

सबकी बाह्य सत्ता में इस तरह का जन्मजात अंधकारमय अंश होता है। यह अपना नहीं वंशगत होता है। इसे नये रूप में गढ़ना होता है।

यह बहुत अच्छा है। -जो देखा है, समझा है वह ठीक है। अंतर में जो पथ देखा है उसी पर चलना होगा, जिस आंतरिक अवस्था पर ध्यान दिया है

www.the-comforter.org

उसे बनाये रखना होगा। बाहर जो है उसे देख लो, जो जरूरी है वह कर लो किंतु उसमें डूब नहीं जाओ, उससे जुड़ नहीं जाओ, उसकी चाहना न करो। यदि कोई यह अवस्था बनाये रख सके तभी वह साधन पथ पर शीघ्रता से आगे बढ़ सकता है, बाधाविघ्न आदि आयें भी तो उसे छू नहीं सकते और बाहा प्रकृति भी धीरे-धीरे अंतर प्रकृति की सुन्दर अवस्था को प्राप्त करेगी।

प्रश्नः- कोई भी मुझे 'न' कहने से पहचान नहीं रहा, 'न' कहने से सब अवाक् हो उठते हैं। कल जैसे इसी स्वप्न में पूरी रात बीत गयी। सवेरे जगने के बहुत देर बाद तक भी इसका प्रेशर शरीर तक में महसूस करती रही।

उत्तरः- स्वप्न का का अर्थ है पुराने देह स्वभाव की मृत्यु और देह-चेतना में नवजन्म की प्राप्ति।

यदि प्राण समर्पित हो जाये तो बाकी सब समर्पित करने में विशेष रुकावट नहीं आती।

'क' और 'ख' के साथ जो बेमेल है वह उनकी मानव प्रकृति की स्वाभाविक हरकत का फल है। चैत्य परिवर्तन को छोड़ अन्य कोई उपाय नहीं। इस सबको एक आंतरिक शांत समता के स्तर से देख अविचलित भाव से निरीक्षण करना सीखना होगा। मानव प्रकृति सहज ही नहीं बदलती-जिनके भीतर चैत्य जागरण और अध्यात्म भित्ति स्थापित हो गयी है उनके लिये भी इस पथ पर प्रकृति को संपूर्ण रूप से अतिक्रम करना, रूपांतरित करना सहज नहीं। जो अभी भीतर से इन चीजों के लिये कच्चे हैं, उनके लिये तो असंभव ही है।

सदा भागवत शक्ति का स्मरण करो, शक्ति को पुकारो, कठिनाई विदा ले लेगी। उससे भयभीत मत होओ, विचलित न होओ-स्थिर हो शक्ति को पुकारो।

बाधाएँ अनंत दीखती तो हैं पर वह

www.the-comforter.org

दिखावा सच नहीं है, राक्षसी माया-भर है- ठीक रास्ते पर चलते-चलते अंत में पथ परिष्कृत हो जाता है।

स्थिर भाव से साधना करती चलो- पुरानी प्रकृति का जो कुछ भी अभी अवशिष्ट है, धीरे-धीरे चला जायेगा।

यह बाधा सबके सामने है। हर पल शक्ति के साथ युक्त होना आसान नहीं। धीर भाव से साधना करते-करते हो जाता है।

मन की बहुत प्रकार की गतियां होती हैं, जिनका आपस में कोई सामंजस्य नहीं। ऐसा साधक में भी होता है, साधारण मनुष्य में भी, सबमें होता है। अंतर इतना ही है कि साधक देखता और जानता है, साधारण मनुष्य अंदर क्या हो रहा है वह नहीं समझता। सब कुछ भगवान् की तरफ मोड़ते-मोड़ते मन एकोन्मुखी होता जाता है।

जब शक्ति के साथ भीतर मिलन हो गया है तब और डरने की जरूरत नहीं। जो परिवर्तन करना होगा वह शक्ति ही कर देगी। वह सब परिवर्तन करने में समय लगता है किंतु उसके लिये चिंता करने की कोई बात नहीं। केवल शक्ति के साथ युक्त और शक्ति के प्रति समर्पित बनी रहो, बाकी सब निश्चित ही हो जायेगा।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव की असीम कृपा

मैं, डॉक्टर अरुण प्रधान, सन् 2009 से जयपुर में गुरुदेव के सिद्धयोग दर्शन से जुड़ा। परम दयालु गुरुदेव का प्यार हमेशा मिला। कई अनुभूतियाँ हुईं जिनको शब्दों में बताना मुश्किल है। हमारे गुरुदेव कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी साथ देते हैं। मुझे आँख की असाध्य बीमारी (सेन्ट्रल रिरस रेटिनोपैथी सी एस आर) से छुटकारा दिलाया। ऐसे ही मेडिकल की सबसे कठिन परीक्षा डी एन बी में भी गुरुदेव की असीम कृपा से उत्तीर्ण हुआ।

इस परीक्षा को लेकर कई बार असफलताओं का सामना भी करना पड़ा पर गुरुदेव समय-समय पर सम्भालते गए। आज मुझे जो सफलता मिली है, मुझे विश्वास नहीं हो रहा है कि यह सब कैसे संभव हुआ क्योंकि हॉस्पीटल में अनवरत ड्यूटी और प्रेक्टिस के साथ-साथ पढ़ाई करना अत्यधिक दुष्कर कार्य था लेकिन गुरुदेव की आंतरिक ऊर्जा मुझे हर पल महसूस होती थी।

हमेशा गुरुदेव से प्रार्थना करें। गुरुदेव कहीं बाहर नहीं, वह तो हर साधक के भीतर विराजमान है। बस उनसे जुड़ने की जरूरत है। वह हमारे भीतर बाहें फैलाकर इन्तजार कर रहे हैं कि कब मेरा भटका हुआ बच्चा मेरे पास आएगा, यही सत्य है।

-डॉ. अरुण प्रधान,
जयपुर

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

दिव्य जन्म और दिव्य कर्म

-श्री अरविन्द

दूसरी ओर, हो सकता है कि वे दिव्य जीवन, दिव्य व्यक्तित्व और दिव्य शक्ति के अवतार होकर आवें, अपने दिव्य कर्म को करने के लिए, जिसका उद्देश्य बाहर से सामाजिक, नैतिक और राजनीतिक ही दिखायी देता हो; जैसा कि राम और कृष्ण की कथाओं में बताया गया है, फिर भी सदा ही यह अवतरण जाति की आत्मा में उसके आंतरिक जीवन के लिए और उसके आध्यात्मिक नवजन्म के लिए एक स्थायी शक्ति का काम करता है।

यह एक अनोखी बात है कि बौद्ध और ईसाई धर्मों का स्थायी, जीवंत तथा विश्व व्यापक फल यह हुआ कि जिन मनुष्यों तथा कालों ने इनके धार्मिक और आध्यात्मिक मतों, रूपों और साधनाओं का परित्याग कर दिया उन पर भी इन धर्मों के नैतिक, सामाजिक और व्यावहारिक आदर्शों का शक्तिशाली प्रभाव पड़ा। पीछे के हिन्दुओं ने बुद्ध, उनके संघ और धर्म को अमान्य कर दिया, पर बुद्धधर्म के सामाजिक और नैतिक प्रभाव की अमिट छाप उनपर पड़ी हुई है और हिन्दूजाति का जीवन और आचार-विचार उससे प्रभावित है।

आधुनिक यूरोप नाममात्र का ईसाई है, पर इसमें जो मानवदया का भाव है वह ईसाई-धर्म के आध्यात्मिक सत्य का सामाजिक और राजनीतिक रूपान्तर है; और स्वाधीनता, समता और विश्वबंधुता की यह अभीप्सा मुख्यत: उन लोगों ने की है जिन्होंने ईसाई-धर्म और आध्यात्मिक साधना को व्यर्थ तथा हानिकर बतलाकर त्याग दिया था और यह काम उस युग में हुआ जिसने स्वतंत्रता के बौद्धिक प्रयास में ईसाई-धर्म को धर्म मानना छोड़ देने की पूरी कोशिश की।

www.the-comforter.org

राम और कृष्ण की जीवनलीला ऐतिहासिक काल के पूर्व की है, काव्य और आख्यायिका के रूप में हमें प्राप्त हुई है और इसे हम चाहें तो केवल काल्पनिक कहानी भी कह सकते हैं। पर चाहे काल्पनिक कहानी कहिये या ऐतिहासिक तथ्य, इसका कुछ महत्व नहीं; क्योंकि उनके चरित्रों का जो शाश्वत सत्य और महत्व है वह तो इस बात में है कि ये चरित्र जाति की आंतरिक चेतना और मानव-जीव के जीवन में सदा के लिए एक आध्यात्मिक रूप, सत्ता और प्रभाव के रूप में अमर हो गये हैं।

www.the-comforter.org

अवतार दिव्य जीवन और चैतन्य के तथ्य हैं; वे किसी बाह्य कर्म में भी उतर सकते हैं, पर उस कर्म के हो चुकने और उनका कार्य पूर्ण होने के बाद भी उस कर्म का आध्यात्मिक प्रभाव बना रहता है; अथवा वे किसी आध्यात्मिक प्रभाव को प्रकटाने और किसी धार्मिक शिक्षा को देने के लिए भी प्रकट हो सकते हैं, किन्तु उस हालत में भी, उस नये धर्म या साधना के क्षीण हो चुकने पर भी, मानवजाति के विचार, उसकी मनोवृत्ति और उसके बाह्य जीवन पर उनका स्थायी प्रभाव बना रहता है। इसलिए अवतार-कार्य के गीतोक्त वर्णन को ठीक तरह से समझने के लिए आवश्यक है कि हम धर्म शब्द के अत्यंत पूर्ण, अत्यंत गंभीर और अत्यंत व्यापक अर्थ को ग्रहण करें, धर्म को वह आंतर और बाह्य विधान समझें जिसके द्वारा भागवत संकल्प

और भागवत ज्ञान मानवजाति का आध्यात्मिक विकास साधन करते और जाति के जीवन में उसकी विशिष्ट परिस्थितियों और उनके परिणाम निर्मित करते हैं।

भारतीय धारणा के हिसाब से धर्म केवल शुभ, उचित, सदाचार, न्याय और आचारनीति ही नहीं है, बल्कि अन्य प्राणियों के साथ, प्रकृति और ईश्वर के साथ मनुष्यों के जितने भी सम्बन्ध है उन सबका सम्पूर्ण नियमन है और यह नियामक तत्व ही वह दिव्य धर्मतत्व है जो जगत् के सब रूपों और कर्मों के द्वारा, आंतर और बाह्य जीवन के विविध आकारों के द्वारा तथा जगत् में जितने प्रकार के परस्पर-सम्बन्ध हैं उनकी व्यवस्था के द्वारा अपने-आपको सिद्ध करता रहता है।

धर्म वह है जिसे हम धारण करते हैं और वह भी जो हमारी सब आंतर और बाह्य क्रियाओं को एक साथ धारण किये रहता है। धर्म शब्द का प्राथमिक अर्थ हमारी प्रकृति का वह मूल विधान है जो गुप्त रूप से हमारे कर्मों को नियत करता है और इसलिए इस सृष्टि से प्रत्येक जीव, प्रत्येक वर्ण, प्रत्येक जाति, प्रत्येक व्यक्ति और समूह का अपना-अपना विशिष्ट धर्म होता है। दूसरी बात यह है कि हमारे अन्दर जो भागवत प्रकृति है उसे भी तो हमारे अन्दर विकसित और व्यक्त होना है, और इस सृष्टि से धर्म अंतः क्रियाओं का वह विधान है जिसके द्वारा भागवत प्रकृति हमारी सत्ता में विकसित होती है। फिर एक तीसरी दृष्टि से धर्म वह विधान है जिससे हम अपने बहिर्मुखी विचार, कर्म और पारस्परिक सम्बन्धों का नियंत्रण करते हैं ताकि भागवत आदर्श की ओर उन्नत होने में हमारी और मानवजाति की अधिक-से-अधिक सहायता हो।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

सिद्ध-योगियों की महिमा

साधकों के ज्ञान बोध के लिए स्वामी शिवोमतीर्थ महाराज की पुस्तक 'अंतिम रचना' के लेख क्रमशः शुरू किये हैं, आशा है साधकों की आराधना में सहायक सिद्ध होंगे। उनको प्राचीन काल की आराधना की कठिनाईयों के बारे में जानकारी मिलेगी, कितनी कठिन आराधना थी और सद्गुरुदेव सियाग ने अति सहज में सिद्धयोग को धरती पर मानव मात्र के कल्याण के लिए उतारा है।

लल के तथाकथित अन्तिम-समय का किस्सा भी बड़ा विचित्र है। यह घटना जम्मू-श्री नगर राजमार्ग पर स्थित एक गाँव विहारा में हुई। कहा जाता है कि एक दिन वह एक टबनुमा मिट्टी के बर्तन में बैठ गई तथा उसी प्रकार के एक अन्य पात्र से अपने-आपको, ऊपर से ढक लिया। लोग उत्सुक होकर उसकी सारी गतिविधियों को देख रहे थे। पहले तो उन्होंने इसे एक संत की मौज मानकर, हस्तक्षेप नहीं किया किन्तु जब काफी समय बीत जाने पर भी लल बाहर न निकली तो उन्होंने ऊपर का ढक्कन हटाने का निर्णय किया। देखा तो लल नहीं थी। हिन्दू तथा मुसलमान दोनों लल को मानते थे। उसके शरीर को जलाने

या दफनाने को लेकर विवाद हो सकता था। संभवतः इसी संभावना को टालने के लिए ऐसा कौतुक किया तथा शरीर किसी के भी हवाले किए बिना अपने-आपको अदृश्य कर लिया।

लल ने कोई नया पंथ नहीं चलाया। कोई शिष्य नहीं बनाया, वह अपना कोई आश्रम, स्थान अथवा स्मारक बनाने के भी विरुद्ध थी। अतः कश्मीर में अथवा अन्यत्र कहीं भी, लल के नाम पर कोई मंदिर या समाधि अथवा कोई अन्य निशान नहीं है जिससे बाद में कोई भी अध्यात्म विरोधी तत्त्व स्वार्थ-सिद्धि के लिए प्रयोग करते।

लल के यह शब्द विचारणीय हैं:

जन्म और मरण प्रकृति का क्रम है, भगवान की लीला है, मेरे लिए दोनों में कोई अन्तर नहीं।

मुझे किसी के भी मरने पर, रोना नहीं आया, और मैं चाहती हूँ, कि मेरे लिए भी कोई न रोए।

लल का बाकी का वृत्तान्त जो समय-समय पर गुरु-महाराज से मुझे प्राप्त होता रहा, आगे के पृष्ठों में यथास्थान दिया गया है।

(१) यह तो अब याद नहीं कि कौन सी तारीख या दिन था किन्तु ईस्वी सन 1966 आरम्भ होने को था। संन्यास के पश्चात् मेरी प्रथम ऋषिकेश यात्रा थी। वातावरण में हल्की ठण्डक का पदार्पण हो चुका था। हम प्रातः काल घूमने जाया करते तो लोगों को स्वेटर पहने देखा करते थे। मैं अपनी अन्य पुस्तकों में लिख ही चुका हूँ कि गुरुदेव स्वामी विष्णु तीर्थ महाराज, जिन्हें पुस्तक में आगे से महाराजश्री कह कर वर्णित किया जाएगा, ठण्डक के मौसम में ऋषिकेश जाना अधिक पसन्द किया करते थे। तब वहाँ सर्दी के कारण, बाहर से आने वाले यात्रियों की भीड़ बहुत ही कम हो जाया करती है। ऋषिकेश में स्थाई निवास करने वाले कई महात्मा भी, अन्यत्र दूसरे गरम प्रान्तों में चले जाते हैं। गीता-भवन तथा परमार्थ-निकेतन के ध्वनि-विस्तारक यन्त्र (लाऊड स्पीकर) भी तब शान्त बने रहते हैं। अधिकांश टांगे वाले, रिक्शा वाले भी, जो दूसरे स्थानों से, अधिक काम मिलने की आशा से, अपने वाहन लेकर ऋषिकेश-हरिद्वार आ जाते हैं, वापिस लौट चुके होते हैं किन्त गंगाजी का प्रवाह निरन्तर बना रहता है। गंगा जी की दिव्यता एवं सौंदर्य, पर्वत शिखरों की नैसर्गिकता एवं आकर्षण, जहाँ तक नज़र जाती है, वहाँ तक फैली हरियाली, महात्माओं के छोटे-बड़े असंख्य आश्रम एवं कुटियाएँ, बन्दरों तथा लंगूरों का मन-भावन उत्पात, सब मिलाकर वहाँ आध्यात्मिकता का शान्त वातावरण ही सर्वत्र रहता है। अतः महाराजश्री के वहाँ

जाने का यही सर्वोत्तम समय था।

महाराजश्री प्रायः तीसरी श्रेणी के शयन कक्ष में प्रवास किया करते थे। उस समय रेल्वे की श्रेणियाँ इसी प्रकार थीं किन्तु इस बार उनके स्वास्थ्य तथा

वृद्धावस्था को देखकर साधकों का आग्रह था कि प्रथम श्रेणी में ही प्रवास किया जाए। अतः दिल्ली के लिए प्रथम श्रेणी के एक कूपे में, (जिसमें केवल दो यात्रियों के प्रवास की ही सुविधा होती है) दो सीटें आरक्षित करा ली गई थीं। इससे महाराजश्री तथा मुझे बातचीत करने में सुविधा रही।

देवास में महाराजश्री के कश्मीर निवासी एक शिष्य थे जो कभी कश्मीर के गवर्नर रहे थे तथा सेवा निवृत्त होकर, रहने के लिए देवास आ गए थे। प्रथम बार उनसे महाराजश्री को लल का परिचय प्राप्त हुआ था। उन्हीं से लल से संबंधित एक पुस्तक भी प्राप्त हुई एवं लल का लिखा एक काव्य संग्रह भी प्राप्त हुआ। इन पुस्तकों को पढ़कर महाराजश्री काफी प्रभावित हुए तथा उनका ध्यान लल के प्रति आकर्षित हो गया।

ऐसा लगता है कि महाराजश्री तथा लल का कई जन्मों का संबंध था तथा काफी गहरे संस्कार थे। किन्तु वह संस्कार इस समय प्रसुप्त अवस्था में थे। उन संस्कारों को उदार होने के लिए या तो अपनी बारी की प्रतीक्षा थी अथवा उन्हें कोई ऐसी बाह्य अनुकूलता उपलब्ध हो जाती जिससे अपनी उदार होने की बारी से पहले ही उदार हो जाते। यह अनुकूलता की सुविधा देवास में रह रहे कश्मीरी साधक ने उपलब्ध करा दी। बस, फिर क्या था। साधन में जैसे एक नया विभाग खुल गया।

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

रूपान्तरण (Transformation)

''आवश्यक है कि अच्छी हो या बुरी, स्वयं परिपाटी ही बदली जाये, क्योंकि अच्छे के साथ अनिवार्य रूप से बुरा जुड़ा हुआ है। सब चमत्कार केवल हमारी दीनता का उलटा अथवा कहना चाहिए सीधा पहलू भर है। पर जरूरत हमें एक सुधरे-सँवरे संसार की नहीं, नये संसार की है। एक 'उच्च प्रकार का समाहित वातावरण हमें नहीं चाहिए; बल्कि यदि असंगत न रहे तो हम कह सकते हैं कि निम्न प्रकार के समाहित वातावरण की जरूरत है, यहाँ सभी कुछ पुण्यधाम हो जाना चाहिए।''

पूरी पृथ्वी परम आत्मन् का प्रत्यक्ष आवास बनेगी।

इस अंतर्वर्ती मैदान की सफाई ही श्री अरविन्द और श्री माँ की सारी कहानी है। यह संभव है कि अतिमानसिक अग्नि के प्रति देह के अनुकूलन की कठिनाइयाँ आखिर अभीष्ट और आवश्यक ही हों। यह शायद सचमुच एक दैहिक, एक भौतिक कठिनाई नहीं है, और यदि असंगत न हो तो हम इसे नीति-संबंधी कठिनाई कह सकते हैं। आगे इस द्वितीय काल के दौरान में श्री अरविन्द और श्री माँ को वस्तुतः यह पता चला कि रूपांतर केवल वैयक्तिक समस्या नहीं बल्कि एक पार्थिव प्रश्न है, और किसी हद तक सामूहिक रूपांतर हुए बिना वैयक्तिक रूपांतर संभव नहीं-कम से कम पूर्णरूपेण जिस दिन सामूहिक विकास की स्थिति में पर्याप्त प्रगति होगी, उस दिन रूपांतर की वर्तमान भौतिक कठिनाइयाँ, जो कि अभी अलंघ्य प्रतीत होती हैं, शायद सब एकबारगी बालू की भीत सम ढह जायेंगी।

असंभव कभी कुछ नहीं हुआ

www.the-comforter.org

करता, कभी नहीं, पर उसका समय आ गया होता है अथवा नहीं। सब विघ्न, चाहे वे किसी भी तरह के हों, अनुभूति हो लेने पर, सदा एक ऐसे उत्कृष्ट सत्य के परम उपयोगी सहायक सिद्ध होते हैं, जिसके अर्थ और उद्देश्य की हम अभी कल्पना नहीं कर सकते हैं। हमारी ऊपर-ऊपर की, बाहरी दृष्टि से लगता हमें यही है कि रूपांतर की समस्या मात्र एक भौतिक समस्या है, क्योंकि हम सदा उलटी दिशा से आरंभ करते हैं, किन्तु वस्तुतः सभी कठिनाइयाँ आंतरिक और मनोवैज्ञानिक होती हैं। देह का इस खौलती हुई अग्नि के साथ मेल बिठाने की जो विकट कठिनाई हमारे सामने है, निस्संदेह वह उतनी एक भौतिक, व्यावहारिक कठिनाई नहीं है जितनी वह सारी पृथ्वी की चेतना की समस्या है, जैसा कि हम आगे देखेंगे। किन्तु हमारी बात एक पहेली बनती जा रही है। श्री अरविन्द और श्री माँ

www.the-comforter.org

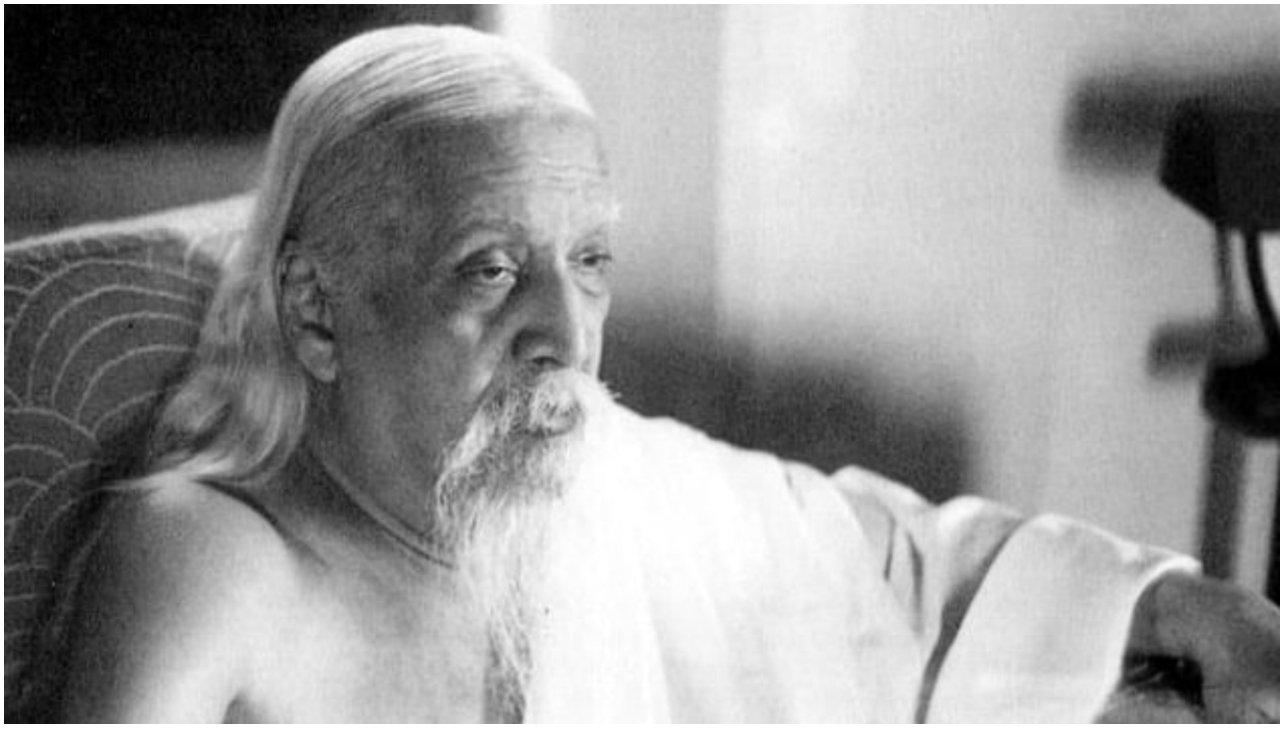

को, कुछ ही और आगे बढ़कर जिस समस्या का सामना करना पड़ा उसे श्री अरविन्द की एक साधक को कही गई, मात्र एक उक्ति को उद्धत कर हम अधिक स्पष्ट कर सकेंगे - मैं अवचेतन के कीचड़ को खोद-खोद कर निकालता रहा हूँ। अतिमानसिक प्रकाश नवंबर (१९३४) से पहले उतर रहा था, पर बाद में सारा कीचड़ ऊपर उठ आया और वह रुक गया। श्री अरविन्द ने एक बार फिर इस चीज़ को सत्य पाया- किन्तु इस बार वैयक्तिक रूप से नहीं, बल्कि सामूहिक रूप से - कि यदि कुछ अधिक तीव्र प्रकाश को खींचा जाये तो नीचे का सारा अंधकार आहत हो चीत्कार कर उठता है।

कितनी विचित्र बात देखने में आती है कि जब-जब श्री अरविन्द और श्री माँ को कोई नयी अनुभूति हुई, जोकि रूपांतर में कुछ प्रगति की सूचक थी तो यह प्रगति शिष्यों की चेतना में स्वतः, उनके कुछ भी जाने बिना, और भी अधिक कठिनाइयों का समय बन गई और कभी-कभी तो व्याधियों अथवा विद्रोह तक में बदल गई, मानो सब चर्र-चर्र करने लगा हो। इसी से हमें क्रियाविधि कुछ समझ आनी शुरू होती है।

यदि एक पिगमी पर सहसा एक सुसंस्कृत मनुष्य के मानसिक प्रकाश का प्रयोग किया जाये तो शायद उसके अंदर ऐसी अधोभौतिक उथल-पुथल देखने में आये जो उस बेचारे को घायल कर पागल बना दे। नीचे अभी बहुत अधिक जंगल पड़ा है। संक्षेप में सारा मामला यह है कि संसार अभी अनजुते जंगलों से भरा पड़ा है। हमारे मानस की बस्ती तो ऊपर की बिल्कुल पतली पपड़ी भर है जिसके नीचे की चतुर्थयुगीन धरती अभी पूरी तरह सूख भी नहीं पायी।

www.the-comforter.org

अवचेतन की शक्तियों या सत्ताओं के विषय में बताते समय वैदिक काल के ऋषिगण कहा करते थे 'आवृत करने वाले', 'भक्षण करने वाले', 'सूर्य का अपहरण करने वाले'। उनका इससे अच्छा वर्णन नहीं किया जा सकता, वे बड़े भारी लुटेरे हैं। जहाँ किसी ने कोई प्रगति की नहीं, एक नये प्रकाश को, पहले से कुछ अधिक तीव्र स्पंद को उतारा नहीं, कि सहसा कोई चीज़ मानो जकड़ लेती है और आ दबाती है, एक आवरण सा डाल नीचे घसीट लेती है, जिसके अंदर दम घुटने लगता है, सब पसीने-पसीने हुआ जाता है, मानो सब टुकड़े-टुकड़े हो रहा हो।

पिछले दिन का वह इतना स्पष्ट, स्वच्छ, सुनम्य, प्रकाशमय स्पंद एकबारगी सरेस सी लसलसी निविड़ता से आच्छादित हो जाता है, मानो ज़रा सी रोशनी का कहीं पता पाने के लिए कोसों दूर फैली शैवाल के पार जाना पड़ेगा। जिधर नज़र डालो, जिस चीज़ को हाथ लगाओ, जो भी करो, सब मानो ख़राब हो, इस निम्न के आक्रमण से सब नष्ट-भ्रष्ट हो गया हो। सब निरर्थक सा मालूम होने लगता है, जबकि बाहर से सारी स्थिति वही होती है, कुछ भी बदला नहीं।

श्री अरविन्द का कथन है : कुछ ऐसा संग्राम चल रहा है जिसमें दोनों पक्ष गुंथे हुए हैं और कोई सा भी कहने योग्य कुछ विशेष आगे नहीं बढ़ पाता (कुछ-कुछ वैसे ही जैसे कि यूरोप के खाई-युद्ध में)। अध्यात्म शक्ति भौतिक जगत् के अवरोध के मुक़ाबले में ज़ोर लगा रही है। उधर वह अवरोध एकएक इंच के लिए संघर्ष कर रहा है और पलट कर न्यूनाधिक सफल हमले करता है। यदि अन्दर का बल और आनंद न होता तो यह तंग

www.the-comforter.org

कर डालने वाला, घृणायुक्त कार्य हुआ होता ।और लगता है कि इस युद्ध का कहीं अन्त नहीं है। ऋषिजन कह गये हैं कि 'खुदाई पर खुदाई करनी होती है और जितना गहरा खोदते जाओ, उतना ही तल और दूर हटता सा प्रतीत होता है। सहस्रों वर्ष पूर्व ऋषि अगस्त्य, जो रूपांतर के लिए प्रयासरत थे, की पत्नी लोपामुद्रा का क्रन्दन है : 'मैं बराबर खोद रही हूँ कितने शरत्काल बीत गये जबसे मैं दिन और रात परिश्रम कर रही हूँ। प्रभात मुझे जीर्ण करते जाते हैं । वय:क्रम हमारे शरीरों की शोभा को गलाये दे रहा है।

पूर्वकाल के लोग जो परम सत्य के वेत्ता थे और देवलोक के वासियों से जिनका संलाप हुआ करता था हाँ, उन तक को अंतिम छोर नहीं मिला। किन्तु ऋषि अगस्त्य जरा भी हताश नहीं हुए और उनका शानदार उत्तर इन विजेता ऋषियों के ही योग्य है। 'देवगण द्वारा संरक्षित प्रयास वृथा नहीं जाता। आओ, इन सब प्रतिबन्द्री शक्तियों को भी हम अनुभव करें, सचमुच हम यहीं विजय करें। शतमुख की इस लड़ाई में, इस होड़ में हम भी भाग लें।' (१.१७९) और वस्तुत: वह अनेक फणों वाले नाग की ही तरह है।

प्रतिदिन रात को सोते हुए, अथवा खुली आँखों ही साधक को बड़े विचित्र लोक दिखाई देते हैं।एक-एक कर वह उन सब ठिकानों का पता लगा लेता है, जहाँ मनुष्यों की सारी कुटिलताओं का उद्व है, जहाँ से सारे मानवीय संग्राम और नजरबंदी-शिविर जन्म लेते हैं- 'यहाँ' का सब 'वहाँ' तैयार होता है। वह उन सारी नीच शक्तियों को उनके बिल में जा धरता है जो कुत्सित और क्रूर मनुष्यों को प्रेरित किया करती हैं

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...
कठिनाई में...

योग के आधार

-महर्षि श्री अरविन्द

तुम्हारे ऊपर 'जो कुछ अवतरण करने की चेष्टा कर रहा है उसके विरुद्ध विवेक और आत्मरक्षा का कोई भी प्रतिबंध' न लगाने की जो बात तुमने सोची है वह बहुत ही खतरनाक है। क्या तुमने यह सोचा है कि जो कुछ अवतरण कर रहा है, वह यदि दिव्य सत्य के अनुकूल न हो, बल्कि संभवतः उसका विरोधी ही हो तो फिर तुम्हारे इस विचार का क्या अर्थ होगा? विरोधी शक्ति साधक के ऊपर अपना अधिकार जमाने के लिये इससे अधिक अनुकूल अवस्था की कामना नहीं करती। सच पूछो तो एकमात्र भागवत शक्ति और दिव्य सत्य को ही बिना बाधा के अपने अंदर प्रवेश करने देना चाहिये। और वहाँ भी साधक को अपनी विवेक शक्ति को अवश्य बनाये रखना चाहिये जिसमें श्रीमां की शक्तिऔर दिव्य सत्य का यदि छद्मवेश बनाकर कोई मिथ्या चीज आ जाये तो उसे वह पहचान सके, तथा साथ ही उस त्याग-शक्ति को भी बनाये रखना चाहिये जो सब प्रकार की मिलावट को छांटकर दूर फेंक दे।

अपनी आध्यात्मिक भवितव्यता पर विश्वास रखो, भूल-भ्रांति से अलग हटो और अपने हृत्पुरुष को श्रीमां की ज्योति और शक्ति के सीधे पथप्रदर्शन की ओर और भी अधिक खोले रखो। अगर केंद्रीय संकल्प सच्चा हो तो प्रत्येक बार की भूल स्वीकार करना एक सत्यतर गति और उच्चतर उन्नति की ओर जाने के लिये एक-एक सोपान बन सकता है।

www.the-comforter.org

मैंने अपने पिछले पत्र में खूब संक्षेप में यह बतलाया है कि कामावेग और योग के संबंध में मेरे विचार क्या हैं। यहां मैं इतना और जोड़ देना चाहता हूँ कि मेरा निर्णय किसी मानसिक अभिमत या पूर्वकल्पित नैतिक धारणा पर अवलंबित नहीं है, बल्कि प्रामाणिक तथ्यों और निरीक्षण और अनुभव के ऊपर अवलंबित है। मैं यह अस्वीकार नहीं करता कि जबतक कोई साधक अपनी आंतर अनुभूति और बाह्य चेतना के बीच एक प्रकार का अलगाव बनाये रखता है, बाह्य चेतना को एक निम्नतर क्रिया समझकर दबाये रखाता है पर रूपांतरित नहीं करता, तब तक यह बिल्कुल संभाव है कि वह कामोपभोग की क्रिया को पूर्ण रूप से छोड़े बिना भी आध्यात्मिक अनुभूतियां प्राप्त करता रहे और साधना में उन्नति करता रहे। ऐसी अवस्था में मन बाह्य प्राणमय (जीवनी-शक्ति से संबंधित अंश) और अन्नमय चेतना से अपने-आपको अलग कर लेता है और अपना निजी आंतर जीवन- यापन करता है। परंतु बहुत थोड़े-से लोग ही वास्तव में किसी हद में पूर्णता के साथ ऐसा कर सकते हैं और जब अनुभूतियाँ प्राण और शरीर के क्षेत्र तक प्रसारित होती हैं तब फिर कामवृत्ति के साथ इस प्रकार का व्यवहार नहीं किया जा सकता। तब वह किसी भी क्षण एक बाधा देनेवाली, उलट-पलट करनेवाली और विकृति उत्पन्न करने वाली शक्तिबन सकती है।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला सहस्रार में स्थित है और उसकी शक्ति मूलाधार में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है।

उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके चेतन होकर उर्ध्वगमन करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही 'मोक्ष' है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्षा की कल्पना करना, एक मृगमरीचिका ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा

का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित परमसत्ता की पराशक्ति है अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित उस परम तत्त्व की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, एक समय में, मात्र एक ही व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह सार्वभौम सत्ता है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग द्वारा शक्तिपात दीक्षा से साधक की कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है। अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार गुरुदेव इस दिव्य ज्ञान को विश्व भर में निःशुल्क बाँट रहे हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो उर्ध्वगमन करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है और ध्यान के समय विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ स्वयं करवाती हैं। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो स्वयं करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके

www.the-comforter.org

आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् परशिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों- आधि दैहिक, आधि भौतिक व आधि दैविक (Physical, Mental & Spiritual) का शमन (नाश) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व विज्ञान सम्बधित समस्या नहीं है, जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है। सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से यह मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।

सिद्धयोग से लाभ-

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं संजीवनी मंत्र के जाप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

. सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, भय, चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।

. विद्यार्थियों की एकाग्रता एवं याद्दाश्त में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।

. आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।

. गृहस्थ जीवन में रहते हुए 'भोग एवं मोक्ष' दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।

. ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है ?

सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? ध्यान करके देखें।

शक्तिपात-दीक्षा

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें साधक को सघन मंत्र जाप व ध्यान करना होता है।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामालाल जी सियाग एक सिद्धगुरु हैं जो शक्तिपात दीक्षा से, अपनी दिव्य शक्ति को संजीवनी मंत्र द्वारा शिष्य में संप्रेषित कर, उसकी सुप्तप्त शक्ति, कुण्डलिनी को जाग्रत कर देते हैं।

गुरुदेव सियाग का संजीवनी मंत्र, एक चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।

गुरुदेव की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें – 07533006009

(सभी जाति एवं धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को सस्नेह निमंत्रण)

www.the-comforter.org

ध्यान की विधि

- आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से, खुली आँखों से देखें।
- फिर गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करूण प्रार्थना करें।
- अब आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं) केन्द्रित करते हुए, संजीवनी मंत्र का मानसिक जाप (बिना होंठ-जीभ हिलाए) करते रहें।
- इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान की अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी।
- इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रूप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।
- नाम जप ही ध्यान की चाबी है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय जपें।

Method of Meditation

- Sit in a comfortable position and look at Gurudev's image for a while.
- Then pray to Gurudev to help you meditate for 15 minutes.
- Now close your eyes and while focussing on Gurudev's image at the centre of your forehead, mentally chant (without moving your lips and tongue) the Sanjeevani Mantra given by Gurudev.
- During this time if you undergo automatic yogic movements, then let them happen. Don't try to stop them. After requested time is over, they will stop.
- Meditate in this way for 15 minutes, in the morning and evening, on an empty stomach.
- For profound meditation, chant the mantra as much as possible while performing your daily activities.

मुख्यालय:- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342001 सम्पर्क : +91-2912753699, +91-9784742595

Email: avsk@the-comforter.org, Website: www.the-comforter.org

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365*POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2020 & VALID UP TO 31.12.2022

यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान ।
शीश दियो जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान ।।

—— अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें ——
Spiritual Science . स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी पोस्ट बॉक्स नं. 41, जोधपुर (राज.) 342001
फोन: + 91 291 2753699, मो. : +91 9784742595 वेबसाइट: www.the-comforter.org

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान्_____

_____

स्वत्वाधिकारी: अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित।